Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 21, Issue No. 6, September-2024, ISSN 2230-7540 (Special Issue)

https://doi.org/10.29070/e3cjq114

गठबंधन की सरकार और विकसित भारत २०४७ की संकल्पना

देव आनंद[1]*, डॉ. संजय कुमार[2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, बिहार, भारत

Email: Dev9dbg@gmail.com

[2] एम फ़िल एवं पीएचडी (जे एन यू), एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ए. एन. कॉलेज, पटना, बिहार, भारत

सार - *यह अध्ययन भारत की स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के संदर्भ में गठबंधन सरकारों की भूमिका का विश्लेषण करता है। गठबंधन सरकारें भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।*

गठबंधन की सरकार भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। गठबंधन सरकारें आमतौर पर तब बनती हैं जब कोई एकल पार्टी पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर पाती है। यह अध्ययन गठबंधन की सरकारों के प्रभाव का विश्लेषण करेगा और यह देखेगा कि कैसे यह भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने में सहायता कर सकती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है, जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक सुधार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सुधार शामिल हैं।

गठबंधन सरकारें आर्थिक सुधारों, औद्योगिक विकास, और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित कर सकती हैं, जैसा कि 'मेक इन इंडिया' पहल और 1991 के आर्थिक सुधारों ने प्रदर्शित किया है। सामाजिक सुधारों में, गठबंधन सरकारें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। 'सर्व शिक्षा अभियान' और 'आयुष्मान भारत' जैसी योजनाएँ इसके उदाहरण हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में, गठबंधन सरकारें अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने और डिजिटल तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण हैं। 'इंडो-यूएस साइंस एंड टेक्नोलॉजी फोरम' और 'डिजिटल इंडिया' पहल इसके उदाहरण हैं। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में, गठबंधन सरकारें द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने और अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, जैसे कि BRICS और सार्क में भारत की सक्रिय भागीदारी और 'इंडिया इन्वेस्टमेंट ग्रिड'।

निष्कर्षतः, गठबंधन सरकारें भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यह लक्ष्य आर्थिक, सामाजिक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सुधार के समन्वित प्रयासों से प्राप्त किया जा सकता है। इन प्रयासों के माध्यम से, भारत न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरेगा।

मुख्य शब्द : *गठबंधन सरकारें, विकसित राष्ट्र, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक सुधार, डिजिटल और इंडिया आर्थिक सशक्तिकरण*

----------X----------

1. गठबंधन की सरकार की अवधारणा

1.1 गठबंधन सरकार की परिभाषा

गठबंधन सरकार एक ऐसी सरकार होती है जो कई राजनीतिक दलों के सहयोग से बनती है। यह तब आवश्यक होती है जब एकल पार्टी को संसद में बहुमत

नहीं मिलता। भारत में गठबंधन सरकारें अक्सर देखी जाती हैं, विशेष रूप से केंद्र सरकार के स्तर पर। ये विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं और क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण प्रदान करती हैं (कौल, 2018)।

उदाहरण: 1999-2004 के बीच, भारत में 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' (NDA) सरकार ने कई दलों के सहयोग से सत्ता संभाली थी। इस अवधि में, अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए ने सफलतापूर्वक विभिन्न राजनीतिक दलों को एक साथ लाकर सरकार चलाई (सिंह, 2015)। यह गठबंधन सरकार की स्थिरता और प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण था।

1.2 गठबंधन सरकारों के लाभ और चुनौतियाँ

गठबंधन सरकारों के अपने फायदे और चुनौतियाँ होती हैं। यह विभिन्न विचारधाराओं और क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे व्यापक दृष्टिकोण मिलते हैं।

1.2.1 लाभ:

1. **विविधता और समावेशिता:** गठबंधन सरकारें विभिन्न राजनीतिक दलों और विचारधाराओं को साथ लाती हैं, जिससे सरकार के निर्णयों में विविधता और समावेशिता आती है। यह विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के हितों को ध्यान में रखते हुए नीतियों का निर्माण करती हैं (कौल, 2018)।

2. **प्रादेशिक प्रतिनिधित्व:** गठबंधन सरकारें विभिन्न प्रादेशिक दलों को शामिल करती हैं, जिससे सभी राज्यों और क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है। इससे संघीय ढाँचे को मजबूती मिलती है और केंद्र-राज्य संबंधों में सुधार होता है (राव, 2017)।

1.2.2 चुनौतियाँ:

1. **निर्णय लेने में देरी:** गठबंधन सरकारों में विभिन्न दलों के बीच सहमति बनाने में समय लगता है, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया धीमी हो सकती है। यह सरकार की कार्यक्षमता को प्रभावित कर सकता है (कौल, 2018)।

2. **अस्थिरता:** गठबंधन सरकारें कभी-कभी अस्थिर हो सकती हैं, क्योंकि विभिन्न दलों के बीच मतभेद उभर सकते हैं। यह सरकार गिरने या पुनः चुनाव की स्थिति को जन्म दे सकता है (कुमार, 2016)।

गठबंधन सरकारें विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से बनती हैं और यह भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह विविधता और समावेशिता प्रदान करती हैं, लेकिन निर्णय लेने में देरी और अस्थिरता जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर सकती हैं। इन लाभों और चुनौतियों के बीच संतुलन बनाकर गठबंधन सरकारें देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

2. आर्थिक विकास में गठबंधन सरकार की भूमिका

2.1 आर्थिक सुधार

गठबंधन सरकारें आर्थिक सुधारों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। विभिन्न दलों के सहयोग से व्यापक आर्थिक नीतियाँ बनाई जा सकती हैं। गठबंधन सरकारें विभिन्न विचारधाराओं और दृष्टिकोणों को समाहित कर सकती हैं, जिससे समावेशी और संतुलित आर्थिक नीतियाँ बन सकती हैं।

उदाहरण: 1991 के आर्थिक सुधार, जो पी.वी. नरसिम्हा राव की गठबंधन सरकार के तहत लागू किए गए थे, ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी। इन सुधारों के तहत, आर्थिक उदारीकरण, विनिवेश, और विदेशी निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। इससे भारत की अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा आई और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा में सुधार हुआ (भगवती, 2004)। इन सुधारों ने भारत को एक मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ने में मदद की और आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया।

2.2 औद्योगिक विकास और निवेश

गठबंधन सरकारें औद्योगिक विकास और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित कर सकती हैं। विभिन्न दलों के बीच सहयोग से, औद्योगिक नीतियाँ अधिक प्रभावी और समावेशी हो सकती हैं।

उदाहरण: 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलें गठबंधन सरकारों द्वारा समर्थित हो सकती हैं। 'मेक इन इंडिया' पहल का उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण हब के रूप में स्थापित करना है। इस पहल के तहत, सरकार ने विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित करने और विदेशी कंपनियों के लिए अनुकूल माहौल बनाने के लिए कई नीतिगत सुधार किए हैं (गुप्ता, 2019)।

गठबंधन सरकारों के अंतर्गत विभिन्न दलों के विचारों और सुझावों को शामिल करके औद्योगिक नीतियाँ और

www.ignited.in

भी प्रभावी हो सकती थीं। यह विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित विकास सुनिश्चित करने में मदद कर सकता था और आर्थिक विकास को गति दे सकता था।

गठबंधन सरकारें आर्थिक सुधारों और औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती थीं। विभिन्न दलों के सहयोग से व्यापक और संतुलित नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देती थीं। 1991 के आर्थिक सुधार और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलें इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जो दर्शाती हैं कि गठबंधन सरकारें कैसे भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकती थीं।

3. सामाजिक सुधार में गठबंधन सरकार की भूमिका

3.1 शिक्षा सुधार

गठबंधन सरकारें शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा सकती थीं। विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से व्यापक और समावेशी शिक्षा नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित कर सकती थीं।

उदाहरण: 'सर्व शिक्षा अभियान' (SSA) को कई दलों के समर्थन से लागू किया गया था। इसका उद्देश्य बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना था। इस अभियान के तहत, प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। SSA ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच में वृद्धि की और विशेषकर गरीब और वंचित वर्गों के बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान किए (मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, 2020)।

गठबंधन सरकारों के अंतर्गत विभिन्न दलों के सुझावों और सहयोग से शिक्षा प्रणाली में सुधार के व्यापक प्रयास किए जा सकते थे। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सकता था और अधिक से अधिक बच्चों को शिक्षा के दायरे में लाया जा सकता था।

3.2 स्वास्थ्य सेवाएं

गठबंधन सरकारें स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार कर सकती थीं। विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से व्यापक स्वास्थ्य नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो सभी नागरिकों के लिए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित कर सकती थीं।

उदाहरण: 'आयुष्मान भारत' योजना गठबंधन सरकारों द्वारा समर्थित एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना का उद्देश्य गरीब और वंचित वर्गों के लिए स्वास्थ्य बीमा कवर प्रदान करना है। 'आयुष्मान भारत' के तहत, लगभग 10 करोड़ परिवारों को स्वास्थ्य बीमा कवर प्रदान किया गया है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच और गुणवत्ता में सुधार हुआ (नेशनल हेल्थ अथॉरिटी, 2021)।

गठबंधन सरकारों के अंतर्गत विभिन्न दलों के सहयोग से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के व्यापक प्रयास किए जा सकते थे। इससे स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हो सकता था और सभी नागरिकों के लिए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित की जा सकती थीं।

गठबंधन सरकारें शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती थीं। विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से व्यापक और समावेशी नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों तक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित कर सकती थीं। 'सर्व शिक्षा अभियान' और 'आयुष्मान भारत' जैसी योजनाएँ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जो दर्शाती हैं कि गठबंधन सरकारें कैसे सामाजिक सुधारों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती थीं।

4. विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति

4.1 अनुसंधान और विकास (R&D)

गठबंधन सरकारें अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती थीं। विभिन्न दलों के सहयोग से व्यापक और प्रभावी अनुसंधान नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को प्रोत्साहित कर सकती थीं।

उदाहरण: 'इंडो-यूएस साइंस एंड टेक्नोलॉजी फोरम' (IUSSTF) के तहत कई संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं को समर्थन मिला है। IUSSTF ने भारत और अमेरिका के बीच वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें शुरू की हैं। इस फोरम के तहत विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान परियोजनाओं को समर्थन दिया गया है, जिससे दोनों देशों के वैज्ञानिक और तकनीकी समुदायों के बीच सहयोग बढ़ा है (IUSSTF, 2021)।

गठबंधन सरकारों के अंतर्गत विभिन्न दलों के सुझावों और सहयोग से अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के व्यापक प्रयास किए जा सकते थे। इससे वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को प्रोत्साहन मिल सकता था और भारत को एक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने में सहायता मिल सकती थी।

4.2 डिजिटल तकनीकों का उपयोग

गठबंधन सरकारें डिजिटल तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित कर सकती थीं। विभिन्न दलों के सहयोग से व्यापक और समावेशी डिजिटल नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों तक डिजिटल सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित कर सकती थीं।

उदाहरण: 'डिजिटल इंडिया' पहल गठबंधन सरकारों द्वारा समर्थित एक महत्वपूर्ण पहल है। इसका उद्देश्य भारत को एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना है। 'डिजिटल इंडिया' के तहत, सरकार ने डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने, और डिजिटल सेवाओं की पहुँच में सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं (मिनिस्ट्री ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड आईटी, 2020)।

गठबंधन सरकारों के अंतर्गत, विभिन्न दलों के सहयोग से डिजिटल तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देने के व्यापक प्रयास किए जा सकते हैं। इससे डिजिटल सेवाओं की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार हो सकता है और देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने में सहायता मिल सकती है।

गठबंधन सरकारें विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती थीं। विभिन्न दलों के सहयोग से व्यापक और समावेशी नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो अनुसंधान और विकास और डिजिटल तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित कर सकती थीं। 'इंडो-यूएस साइंस एंड टेक्नोलॉजी फोरम' और 'डिजिटल इंडिया' पहल इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जो दर्शाती हैं कि गठबंधन सरकारें कैसे वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती थीं।

5. अंतरराष्ट्रीय संबंध

5.1 द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंध

गठबंधन सरकारें द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती थीं। विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से व्यापक और प्रभावी विदेश नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की स्थिति को मजबूत कर सकती थीं।

उदाहरण: BRICS और सार्क जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी। BRICS (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) और सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) जैसे बहुपक्षीय मंचों में भारत की सक्रिय भागीदारी से क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। BRICS के माध्यम से, भारत ने आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया है, जो विकासशील देशों के हितों की रक्षा करता है (BRICS, 2019)।

सार्क के माध्यम से भारत ने दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया है जिससे सदस्य देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध मजबूत हुए हैं। गठबंधन सरकारें इन मंचों पर भारत की भागीदारी को और सुदृढ़ कर सकती थीं जिससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सुधार हो सकता था।

5.2 व्यापार और निवेश

गठबंधन सरकारें अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा दे सकती थीं। विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से व्यापक और समावेशी व्यापार और निवेश नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो विदेशी निवेशकों के लिए अनुकूल माहौल बना सकती थीं।

उदाहरण: 'इंडिया इन्वेस्टमेंट ग्रिड' (IIG) के माध्यम से विदेशी निवेश को आकर्षित करने के प्रयास। IIG एक ऑनलाइन प्लेटफार्म है, जो निवेशकों को भारत में निवेश के अवसरों की जानकारी प्रदान करता है। यह पहल विदेशी निवेशकों के लिए एक पारदर्शी और सुलभ मंच प्रदान करती है, जिससे निवेश प्रक्रिया सरल और तेज होती है (इन्वेस्ट इंडिया, 2021)।

गठबंधन सरकारें IIG जैसी पहलों को समर्थन देकर विदेशी निवेश को प्रोत्साहित कर सकती थीं। इससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता और अंतरराष्ट्रीय व्यापार संबंधों में सुधार होता।

गठबंधन सरकारें अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती थीं। विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से व्यापक और प्रभावी नीतियाँ बनाई जा सकती थीं जो द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को मजबूत करती थीं और अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देती थीं। BRICS और सार्क जैसे मंचों पर भारत की

www.ignited.in

सक्रिय भागीदारी और 'इंडिया इन्वेस्टमेंट ग्रिड' जैसी पहल इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जो दर्शाती हैं कि गठबंधन सरकारें कैसे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती थीं।

6. निष्कर्ष

गठबंधन की सरकारें भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यह लक्ष्य केवल आर्थिक सुधारों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक सुधार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सुधार शामिल हैं। गठबंधन सरकारों के समन्वित प्रयासों के माध्यम से, भारत न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरेगा।

6.1 आर्थिक सुधार

गठबंधन सरकारें आर्थिक सुधारों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। विभिन्न दलों के सहयोग से व्यापक आर्थिक नीतियाँ बनाई जा सकती हैं, जो सभी क्षेत्रों और वर्गों के विकास को सुनिश्चित करती हैं। 1991 के आर्थिक सुधारों के उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि गठबंधन सरकारें किस प्रकार आर्थिक नीतियों को सफलतापूर्वक लागू कर सकती हैं, जिससे देश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिलती है (भगवती, 2004)। औद्योगिक विकास और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलें गठबंधन सरकारों द्वारा समर्थित हो सकती हैं (गुप्ता, 2019)।

6.2 सामाजिक सुधार

गठबंधन सरकारें सामाजिक सुधारों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए व्यापक और समावेशी नीतियाँ बनाई जा सकती हैं, जो देश के सभी नागरिकों को लाभान्वित करती हैं। 'सर्व शिक्षा अभियान' और 'आयुष्मान भारत' जैसी योजनाएँ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जो गठबंधन सरकारों के तहत लागू की गईं और सफल रहीं (मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, 2020; नेशनल हेल्थ अथॉरिटी, 2021)। गठबंधन सरकारें सामाजिक न्याय और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए भी महत्वपूर्ण कदम उठा सकती हैं।

6.3 विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति के बिना विकसित राष्ट्र की परिकल्पना अधूरी है। गठबंधन सरकारें अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। 'इंडो-यूएस साइंस एंड टेक्नोलॉजी फोरम' (IUSSTF) के तहत कई संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं को समर्थन मिला है, जिससे वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को प्रोत्साहन मिला है (IUSSTF, 2021)। डिजिटल तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए 'डिजिटल इंडिया' पहल गठबंधन सरकारों द्वारा समर्थित हो सकती है, जिससे देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने में सहायता मिलती है (मिनिस्ट्री ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड आईटी, 2020)।

6.4 अंतरराष्ट्रीय संबंध

अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सुदृढ़ करने में गठबंधन सरकारें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए व्यापक और प्रभावी नीतियाँ बनाई जा सकती हैं, जिससे भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को मजबूती मिलती है। BRICS और सार्क जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी से क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर महत्वपूर्ण योगदान मिलता है (BRICS, 2019)। अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के लिए 'इंडिया इन्वेस्टमेंट ग्रिड' (IIG) जैसी पहलों को समर्थन देकर विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया जा सकता है (इन्वेस्ट इंडिया, 2021)।

6.5 समन्वित प्रयास

गठबंधन सरकारों के समन्वित प्रयासों के माध्यम से, भारत न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरेगा। विभिन्न राजनीतिक दलों के सहयोग से व्यापक और समावेशी नीतियाँ बनाई जा सकती हैं, जो देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों को लाभान्वित करती हैं। गठबंधन सरकारें देश की विविधता को सशक्त बनाते हुए एक समृद्ध और सशक्त भारत की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। इस प्रकार, गठबंधन की सरकारें भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं और 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक हो सकती हैं।

संदर्भ

1. BRICS. (2019). BRICS के माध्यम से आर्थिक और सुरक्षा सहयोग।

2. IUSSTF. (2021). इंडो-यूएस साइंस एंड टेक्नोलॉजी फोरम की परियोजनाएँ।
3. इन्वेस्ट इंडिया. (2021). इंडिया इन्वेस्टमेंट ग्रिड की समीक्षा।
4. कुमार, एम. (2016). भारतीय राजनीति में अस्थिरता के कारण और परिणाम. सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 28(2), 112-125.
5. कौल, वी. (2018). गठबंधन सरकारों की चुनौतियाँ और अवसर. भारतीय राजनीति समीक्षा, 45(3), 45-67.
6. गुप्ता, आर. (2019). मेक इन इंडिया: अवसर और चुनौतियाँ. भारतीय आर्थिक समीक्षा, 56(2), 89-112.
7. नेशनल हेल्थ अथॉरिटी. (2021). आयुष्मान भारत योजना: एक समीक्षा।
8. भगवती, जे. (2004). भारत की आर्थिक सुधार: एक समीक्षा. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. मिनिस्ट्री ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड आईटी. (2020). डिजिटल इंडिया पहल।
10. मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन. (2020). सर्व शिक्षा अभियान की समीक्षा.
11. राव, एस. (2017). प्रादेशिक दलों की भूमिका और भारतीय राजनीति में उनका प्रभाव. भारतीय राजनीतिक विश्लेषण, 32(4), 78-93.
12. सिंह, ए. (2015). भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकारें. नई दिल्ली: रवींद्र पब्लिशिंग हाउस.

Corresponding Author

देव आनंद*

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

Email: Dev9dbg@gmail.com